'यह तो अशोक गहलोत का पुअर डिफैंस व फेस सेविंग है'

डॉ. सतीश पूनिया ने यह भी कहा, गहलोत की बात से लगता है कि, पार्टी की लड़ाई और विखराव को ढकने के लिए उन्होंने एक कुतर्क का सहारा जरूर लिया है

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर, 24 नवम्बर। राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के द्वारा पूर्व उपमुख्यमंत्री सचिन पायलट को गद्दार कहने और पायलट समर्थक विधायकों को सरकार गिराने के लिए 10-10 करोड़ रुपए भाजपा मुख्यालय से पहुंचाए जाने के आरोपों को भाजपा प्रदेशाध्यक्ष सतीश पूनिया ने सिरे से खारिज किया है।

सतीश पूनिया ने एनडीटीवी को दिये इंटरव्यू में साफ कहा कि भाजपा से सचिन पायलट का कोई लेना-देना नहीं है। ये कांग्रेस का भीतरी झगड़ा है। उसके दोषी हम कैसे हो सकते हैं? वर्ष 2018 में कांग्रेस की सरकार बनने के बाद राजस्थान में खुलकर नारे लगे थे, "हमारा मुख्यमंत्री कैसा हो...सचिन पायलट जैसा हो।" राजभवन में भी दो-दो मुख्यमंत्रियों के नारे लगे थे, वह नारे भाजपा ने थोड़े ही लगवाए थे। गहलोत के आरोपों में कोई दम नहीं है। हम पायलट से न कभी मिले, ना बात की। ना पहले जरूरत थी, ना आज है। भाजपा को तो आरोप लगाने का माध्यम अशोक गहलोत ने अपने बचाव के लिए बना लिया है।

भाजपा प्रदेशाध्यक्ष ने कहा कि कांग्रेस की पुरानी फिल्म सामने आ गई है। फिल्म का नाम है-गद्दार कौन ? गहलोत ने अपने इंटरव्यू में आरोप लगाया है कि भाजपा के लोग राजस्थान में सरकार गिराने के षड़यंत्र में शामिल थे। लेकिन अभी कांग्रेस यह तय नहीं कर पाई गलती किसने की, सजा किसको होगी। राजस्थान की जनता 4 साल से भुगत रही है। सचिन पायलट, भाजपा के नहीं, बल्कि उनके खुद के पीसीसी चीफ और डिप्टी सीएम थे। अशोक गहलोत भूल जाते हैं कि वर्ष 2018 के विधानसभा चुनाव में उनको मैंडेट नहीं था। कांग्रेस की 99 सीट थीं। 13 निर्दलीय और 6 बसपा विधायकों को उन्होंने मर्ज किया।

भाजपा हेडक्वार्टर से पायलट समर्थक विधायकों को पैसा पहुंचाए जाने के आरोपों पर सतीश पूनिया ने कहा कि, "ये तो सियासी आरोप हैं, मैं भी कह सकता हूँ कि अशोक गहलोत ने सरकार बचाने के लिए कितने अनैतिक काम किए होंगे। इसलिए इन सियासी आरोपों का कोई मतलब नहीं है। राजस्थान की जनता और कांग्रेस आलाकमान जानता है कि किसका कंडक्ट कैसा था? यह तो अशोक गहलोत का पूअर डिफेंस और फेस सेविंग है। मुझे लगता है कांग्रेस ने कुर्सी बचाने के लिए क्या-क्या अनैतिक काम किया होगा। लेकिन उसका मेरे पास कोई सबूत नहीं है। राजनीति में चलती-फिरती बात की कोई तवज्जो नहीं है। गहलोत की बात से लगता है कि पार्टी की लड़ाई और बिखराव को ढकने के लिए उन्होंने एक कुतर्क का सहारा जरूर लिया है। मुझे इसमें सियासी दम नजर नहीं आता है।"

क्या भाजपा नेता, सचिन पायलट और विधायकों से नहीं मिले? इस सवाल पर सतीश पूनिया ने कहा कि "क्यों मिले होंगे, क्या कारण है ? पायलट अपनी मर्जी से अलग हुए। वो हमारे विधायक नहीं थे। उनके पीसीसी चीफ थे। हमने उनको नहीं भेजा। ना उकसाया, ना आमंत्रित किया। कोई अपनी पार्टी से टूटकर जाना चाहे तो हम क्या करें।

- 'ये तो सियासी आरोप हैं, मैं भी कह सकता हूँ कि अशोक गहलोत ने सरकार बचाने के लिए कितने अनैतिक काम किए होंगे। इसलिए इन सियासी आरोपों का कोई मतलब नहीं।'
- पूनिया ने कहा, पायलट अपनी मर्ज़ी से अलग हुए। वो हमारे विधायक नहीं थे। उनके पी.सी.सी. चीफ थे। हमने उनको नहीं भेजा। ना उकसाया, ना आमंत्रित किया। कोई अपनी पार्टी से टूटकर जाना चाहे तो क्या करें।

भाजपा मुख्यालय से कैश भेजे जाने के सवाल पर पूनिया ने कहा कि कोई अंधा आदमी भी इस आरोप को स्वीकार नहीं करेगा। अशोक गहलोत जिस तरह की सियासत करते हैं, वो इस तरह के आरोप हमेशा लगाते हैं, जिनका कोई आधार और तर्क नहीं होता है। वह केवल उनके अपने फ्रस्टेशन और निराशा को जाहिर करने का एक तरीका है कि बीजेपी के माथे पर ठीकरा फोड़ा जाए।।"

नेता प्रतिपक्ष गुलाब चन्द कटारिया ने भी गहलोत पर तंज कसते हुए मीडिया में बयान दिया कि प्रदेश में जिस तरह का बखेड़ा चल रहा जिसके बाद बड़ा उलट फेर होने वाला है। गहलोत तो सी एम का पद कभी भी नहीं छोड़ेंगे, अगर छोड़ेंगे तो पायलट के पक्ष में तो कभी भी नहीं छोड़ेंगे, "चाहे इससे पार्टी टूटे या डूबे वे इस सीमा तक भी जा सकते हैं।" उन्होंने आगे कहा इस पूरे मामले में बीच का रास्ता नहीं निकल सकता है कि सी एम गहलोत, सी.पी. जोशी को सी.एम. पद पर बिठा दें। ताकि गहलोत के काम भी चलते रहे।

उप नेता प्रतिपक्ष राजेन्द्र राठौड़ ने भी इस मामले में प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि मुख्यमंत्री गहलोत का अपने प्रतिद्वंद्वियों को नकारा, निकमा और धोखेबाज कहना "एस.ओ.पी. है। उन्होंने कहा कि अगर मुख्यमंत्री कहते हैं कि उनके पास सबूत है कि सरकार को गिराने के लिए 10-10 करोड़ रुपये दिये गये थे। इसमें भाजपा शामिल थी तो मुख्यमंत्री इतने समय तक चुप क्यों थे। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री के सहयोगी महेश जोशी ने चार-चार एफआईआर दर्ज की थी, "इन एफआईआर की जांच आगे क्यों नहीं बढ़ी। अगर मुख्यमंत्री इस मामले से जुड़े हुए हैं तो इस मामले की जांच सी.बी.आई. को क्यों नहीं दे देते?"

उन्होंने कहा कि सी एम का यह बयान मुख्यमंत्री का फ्रस्टेशन दर्शाता है शायद मुख्यमंत्री को आला कमान से जाने का नोटिस मिल गया है, इसलिए यह सब हो रहा है।

उदयपुर के दो रियल एस्टेट कारोबारियों पर इन्कम टैक्स की रेड

इन्कम टैक्स विभाग ने अंकुर एवं एक्मे ग्रुप के कुल 37 ठिकानों पर एक साथ रेड की, तलाशी अभी भी जारी है

उदयपुर, 24 नवम्बर (कासं)। उदयपुर में दो रियल एस्टेट कारोबारियों पर इनकम टैक्स की रेड में बड़ी मात्रा में नकदी और जेवरात मिले हैं। इनकम टैक्स की टीम ने 100 करोड़ से ज्यादा संपत्तियों के दस्तावेज जब्त कर उनकी जांच शुरू की है।

प्राप्त जानकारी अनुसार अंकुर और एक्मे ग्रुप के कुल 37 ठिकानों पर फिलहाल सर्चिंग जारी है। इस समूह के पार्टनर के साथ ही समूह के मालिक के करीबी कर्मचारियों से भी पूछताछ चल रही है। सूत्रों की मानें तो यह कार्रवाई शुक्रवार तक चल सकती है। विभाग द्वारा हरेक संबंधित व्यक्ति से गहन पूछताछ के बाद उसे क्रॉस चेक भी किया जा रहा है। पूछताछ में निर्मल जैन, रमेश जैन और कालूलाल जैन से इन संपत्तियों के बारे में संतोषजनक जवाब नहीं मिले हैं। टीम को अब तक कार्रवाई में आठ किलो से ज्यादा सोने के जेवरात और 1 करोड़ से अधिक का नकद मिला है।

सूत्रों से प्राप्त जानकारी के अनुसार एक्मे समूह के निर्मल जैन, रमेश जैन, अनिल चित्तौड़ा, रॉयल के अशोक जैन,

- सौ करोड़ रू. से ज्यादा सम्पत्तियों के दस्तावेज जब्त किए गए हैं और आठ किलो से ज्यादा सोने के जेवरात और 1 करोड़ रू. से ज्यादा का कैश मिला है।

भूपेंद्र जैन, अनीश धींग, बंशीलाल सुहालका, पंकज जैन सहित इनसे जुड़े करीब 40 लोगों से लंबी पूछताछ चल रही हैं। गुरुवार सुबह से चल रही कार्रवाई में राजस्थान के कई शहरों के साथ ही मुंबई के कई बड़े प्रोजेक्ट में निवेश किए जाने से जुड़े दस्तावेज मिले हैं। कालूलाल जैन और उसके सहयोगियों के 17 से ज्यादा अघोषित लॉकर भी सामने आए हैं। दोनों ग्रुप के कारोबारियों द्वारा उदयपुर के रामी रॉयल रिसोर्ट समेत एक दर्जन रिसोर्ट में भी निवेश की बात सामने आई है। सॉफ्ट स्टोन कारोबार में इन्वेस्टमेंट के साथ ही मोटे ब्याज पर लोगों को ऋण देने की फाइल भी मिली है। बड़ी प्रॉपर्टी के दस्तावेजों की जांच हो रही है। जयपुर के साथ ही राजस्थान के कई शहरों की इनकम टैक्स की टीम इसमें शामिल हैं।

टीम हवाला के पैसों से खरीदी गई जमीनों के दस्तावेजों की जांच कर रही है। यही नहीं टीम आय के बारे में भी विस्तार से जानकारी ले रही हैं। उदयपुर में इन समूहो के पास एक हजार करोड़ से ज्यादा की प्रॉपर्टी हैं। उदयपुर के सवीना में रहने वाले कालूलाल जैन की 500 करोड़ रूपए से ज्यादा की जमीनें हैं। काया, बलीचा, तितरडी और नेला में भी उनकी प्रॉपर्टी है। ऋषभदेव में 2 मार्बल माइंस और क्रेशर गट्टी के प्लांट भी हैं।

वहीं निर्मल जैन का उदयपुर में हाउसिंग फाइनेंस का काम ज्यादा है। निर्मल का सवीना में एक्मे रियल एस्टेट का कारोबार है। नेला में उनकी सर्वाधिक जमीन है। हालांकि लंबे समय से उनका कई लोगों से निवेश को लेकर विवाद चल रहा है। कालूलाल जैन के जरिए ही निर्मल और रमेश ने प्रॉपर्टी में निवेश किया था। लोगों को वक्त पर रिटर्न नहीं मिलने से यह आपसी विवाद चल रहा है। मूल रूप से सराड़ा क्षेत्र के रहने वाले भूपेन्द्र जैन भी बढ़ी जमीनों के सौदों में कालूलाल और निर्मल के साथ शामिल हैं।

मु.मंत्री बड़ा दिल रखें, इस्तीफा दें, ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

शर्मा जैसे दिवंगत हो चुके विधायकों को भी कटघरे में खड़ा कर रहे हैं। इससे उनके परिवार पर क्या बीत रही होगी ?

राजेंद्र गुढ़ा ने कहा कि कांग्रेस आलाकमान को अब विधायक दल की बैठक करवानी चाहिए, क्योंकि आलाकमान ने जो नोटिस दिए थे, न तो उन पर कार्रवाई हुई, उल्टा मुख्यमंत्री इस तरह से बयान दे रहे हैं। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री अशोक गहलोत निकम्मा, नकारा ,गद्दार वह सब कुछ बोलते रहते हैं, लेकिन हकीकत यह है कि सचिन पायलट से बेहतर राजस्थान में कांग्रेस पार्टी की सेहत के लिए कोई भी अच्छा नहीं हो सकता है।

उन्होने कहा कि मुख्यमंत्री भले ही यह दावा कर रहे हैं कि पायलट के पास 10 विधायक नहीं हैं। उन्हें मैं बता दूं कि उनके साथ होटल में रहे 102 विधायकों में से आज भी पायलट के साथ चार्टर प्लेन में चार विधायक मध्य प्रदेश गए हैं, एक मैं खड़ा हूं। ऐसे में मुख्यमंत्री गलत बोल रहे हैं।

गुढ़ा ने कहा कि मुख्यमंत्री अगर इतने आश्वस्त हैं तो फिर काउंटिंग क्यों नहीं करा लेते हैं, 80 फीसदी एमएलए सचिन पायलट के साथ नहीं हो तो हम दावेदारी छोड़ देंगे। मुख्यमंत्री पैसे लेने वालों में जिसका नाम निकाल रहे हैं, उनमें से 5 लोग तो उनकी कैबिनेट में हैं। उनको क्यों बैठा रखा है, अब बार बार उनको गद्दार क्यों बोल रहे हो ,क्या इन 19 लोगों को टिकट नहीं दोगे। गुढ़ा ने कहा कि कांग्रेस विधायक कांग्रेस आलाकमान के साथ हैं। कांग्रेस आलाकमान के आशीर्वाद से सब एमएलए बने, उनके आशीर्वाद से ही मंत्री और मुख्यमंत्री हैं। अगर कांग्रेस छोड़ते हैं तो यह विधायक अपने दम पर गांव के सरपंच नहीं बन सकते, नगरपालिका और निगम में पार्षद भी नहीं बन सकते। यह नेता विधायक इसलिए बनकर बैठे हैं क्योंकि कांग्रेस हाईकमान का इन्हें आशीर्वाद है।

दूसरी ओर अशोक गहलोत समर्थक निर्दलीय विधायक और मुख्यमंत्री के सलाहकार बने हुए संयम लोढ़ा ने कहा कि आज भी 101 विधायक अशोक गहलोत के साथ है और अशोक गहलोत पूरे 5 साल मुख्यमंत्री रहेंगे। मंत्री रामलाल जाट की मौजूदगी में सिरोही के कार्यक्रम में लोढ़ा ने कहा कि मंत्री ने आज यहां इतनी उपलब्धियां गिनाई है, वह सब मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के कारण है। उन्होंने कहा कि मैं अखबारों में पढ़ता हूं, आपके ही कुछ सहयोगी बातें करते रहते हैं कि मुख्यमंत्री बदलो, परिवर्तन करो। अरे भाई आपकी पार्टी ने तो अभी अभी चुनाव के जरिए अध्यक्ष का फैसला किया है तो फिर से हाथ खड़े करवा देते है।"

गहलोत की ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

"अपने युवा सहयोगी सचिन पायलट के साथ अपने जो भी मतभेद उन्होंने बताए हैं, उन्हें पार्टी में इस तरह से सुलझाया जाएगा जिससे पार्टी को पार्टी को मजबूती मिलेगी।"

उन्होंने कहा कि अभी हरेक कांग्रेसी कार्यकर्ता का कर्तव्य है कि पहले से ही बड़े पैमाने पर सफल हो रही भारत जोड़ो यात्रा को उत्तर भारतीय राज्यों में और ज्यादा असरदार बनाया जाए।

मांगें नहीं मानीं गईं तो राहुल गांधी की यात्रा रोकेंगे: विजय बैंसला

गुर्जर आरक्षण संघर्ष समिति राहुल की यात्रा रोकने पर अडिग

कोटा, 24 नवम्बर (निसं)। गुर्जर आरक्षण संघर्ष समिति राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा रोकने पर अडिग है। गुरुवार को आरक्षण संघर्ष समिति के अध्यक्ष विजय बैंसला कोटा पहुंचे। इससे पहले वह झालावाड़ रूट पर भारत जोड़ो यात्रा का मार्ग देखकर आए हैं। वे यह पता लगा रहे हैं कि यात्रा को किस जगह पर रोका जा सकता है। कोटा में पत्रकारों से वार्ता करते हुए उन्होंने कहा कि अगर उनकी मांगे नहीं मानी गई तो वे राहुल गांधी की यात्रा रोकेंगे। हालांकि विजय बैंसला ने यह नहीं बताया कि वे किस जगह पर यात्रा को रोकेंगे और उनका विरोध का तरीका किस तरीके का होगा। लेकिन उनके एक साथी ने कहा है कि यात्रा मध्य प्रदेश और राजस्थान के बॉर्डर पर ही झालावाड़ में रोकी जाएगी और जब तक मांगे नहीं मानी जाती तब तक विरोध प्रदर्शन जारी रहेगा।

- इससे पहले विजय बैंसला झालावाड़ रूट पर भारत जोड़ो यात्रा का मार्ग देखकर आए हैं। वे देख रहे हैं कि यात्रा को किस जगह पर रोका जा सकता है।
- बैंसला ने कहा है कि, सरकार का अब केवल एक साल बचा है। अगले 3 महीने बाद ब्यूरोक्रैसी मंत्रियों की और सरकार की बात मानना बंद कर देगी। इसके बाद हमारा समझौता फिर अटक जाएगा।

विजय बैंसला ने कहा कि राजस्थान सरकार हमारी भावनाओं को ठेस पहुंचा रही है 4 साल पहले जो समझौता हुआ था उसे अभी तक लागू नहीं किया गया है। हम नई मांगे नहीं कर रहे, पुराने समझौते को लागू करने की ही बात कर रहे हैं। जब बैंसला से यह पूछा गया कि आप पर यह आरोप लग रहे हैं कि आप यह सब भाजपा के पक्ष में और सचिन पायलट के विरोध में कर रहे हैं तो उन्होंने कहा कि यह कोई पॉलिटिकल स्टैंड नहीं है । समाज के हित में बात की जा रही है। इसमें से पॉलिटिक्स हट जानी चाहिए। जब उनसे यह पूछा गया कि क्या विरोध हाडोती में होगा तो उन्होंने कहा कि विरोधी राजस्थान में किया जाएगा।

बैंसला ने कहा कि जब भिड़ंत होगी राहुल गांधी की यात्रा में विघ्न होगा इसके बाद सरकार बात करेगी तो इसका मतलब है कि सरकार यह खुद चाहती है। हमने पिछले 4 सालों में सीएमओ से लेकर विधायक स्तर तक हर जगह बात की है।

बैंसला ने कहा है कि सरकार को अब केवल 1 साल बचा है । अगले 3 महीने बाद ब्यूरोक्रेसी मंत्रियों की और सरकार की बात मानना बंद कर देगी। इसके बाद हमारा समझौता फिर अटक जाएगा। उन्होंने यह भी कहा कि सचिन पायलट को सीएम बनाने की मांग वह पहले भी कर चुके हैं। यह केवल अकेली मेरी मांग नहीं है यह समाज का सैंटीमैंट है। समाज बड़े स्तर पर प्रभुत्व चाहता है। हमारी संख्या यहां पर 7 प्रतिशत है।

'जिसके पास ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

हूं। राजस्थान में सरकार आना जरूरी है। मैं तीन बार सीएम रह चुका। मेरे लिए सीएम रहना जरूरी नहीं है। आप सर्वे करवा लीजिए कि मेरे मुख्यमंत्री रहने से सरकार आ सकती है तो मुझे रखिए। अगर दूसरे चेहरे से सरकार आ सकती है तो उसे बनाइए। नया चेहरा सरकार रिपीट नहीं करवा सकता और सचिन पायलट को स्वीकार नहीं कर सकते।"

सचिन पायलट के साथ अदावत पर गहलोत बोले कि "जब 2009 में लोकसभा चुनाव में राजस्थान से 20 सांसद जीते तो मुझे दिल्ली बुलाया गया। राजस्थान से मंत्री बनाने के बारे में मुझसे पूछा गया। सचिन पायलट को जानकारी है, मैंने पायलट को केंद्र में मंत्री बनाने की सिफारिश की थी। उस समय वसुंधरा राजे की सरकार में 70 गुर्जर मारे गए थे, यहां गुर्जर-मीणाओं में झगड़ा था। बाद में मेरे पास सचिन पायलट का फोन आया था कि मेरी सिफारिश कीजिए, जबकि मैं तो पहले ही सिफारिश कर चुका था। जिस आदमी के दिल में प्यार होगा, तभी तो वह नौजवान की सिफारिश करेगा।

राजस्थान में 25 सितंबर की घटना को लेकर भी गहलोत ने सचिन पायलट के सिर ठीकरा फोड़ते हुए कहा कि 25 सितंबर को पायलट की वजह से माहौल बिगड़ा। मुझे कोई टेंशन नहीं है। थाड़े बहुत मतभेद सब जगह होते हैं, 25 सितंबर को बगावत नहीं हुई थी। वर्ष 2019 में बगावत हुई थी, 34 दिन होटलों में रहे। पच्चीस सितंबर को 90 लोग इकट्ठे हुए, ये वे लोग थे, जिन्होंने सरकार बचाने में सहयोग किया, वर्ना सरकार बच नहीं सकती थी।

बिना हाईकमान कोई सीएम सरकार बचा ही नहीं सकता। कांग्रेस का कोई मुख्यमंत्री ऐसा नहीं है जो हाईकमान के बिना विधायकों का समर्थन ले ले। जिसने पार्टी के साथ गद्दारी की, गद्दारी किए हुए आदमी को हमारे विधायक कैसे स्वीकार कर सकते हैं। उस दिन भी एक बात फैलाई गई कि पायलट को सीएम बनाया जा रहा है। पायलट ने खुद ऐसा व्यवहार किया कि वे सीएम बनने जा रहे हैं। उन्होंने कई विधायकों को फोन किए कि पर्यवेक्षक आ रहे हैं, उन्हें यह कहना है। इस हालात में एमएलए को यह भ्रम हो गया कि पायलट विधायक दल की बैठक के दूसरे दिन ही शपथ ले रहे हैं। इसलिए 90 विधायक इकट्ठे हो गए थे। वे सब निष्ठावान हैं और हाईकमान के साथ हैं।

गहलोत ने कहा कि मानेसर में पायलट के साथ बगावत करने वाले विधायक गए थे। जिस रिसोर्ट में मध्यप्रदेश के विधायकों को ठहराया गया था, उसी में पायलट समर्थक विधायकों को रोका गया था। हम उम्मीद नहीं कर सकते थे कि पार्टी का अध्यक्ष अपनी ही पार्टी की सरकार गिराने के लिए विपक्ष से मिला हुआ है। इतिहास में आज तक कभी ऐसा नहीं हुआ। इसी वजह से विधायक पायलट का नाम सुनते ही नाराज थे।

गहलोत ने कहा कि मानेसर जाकर आने के बाद यदि वो माफी मांग लेते तो मुझे माफी नहीं मांगनी पड़ती। माहौल बदल जाता, वो नौजवान हैं, यह नौबत नहीं आती। पायलट माफी मांग लेते तो 25 सितंबर की घटना ही नहीं होती। विधायक दल का नेता होने के कारण मेरी मॉरल ड्यूटी थी, वह बैठक नहीं हो सकी, इसलिए मैंने माफी मांगी।

पायलट और समर्थक विधायकों को साइडलाइन करने के आरोप को खारिज करते हुए गहलोत बोले कि सवाल ही पैदा नहीं होता। उनके सपोर्टर सार्वजनिक रूप से कह चुके हैं कि सब काम होते हैं। पायलट समर्थक विधायक अजय माकन को अकेले में कह चुके हैं कि मुख्यमंत्री की तरफ से कोई शिकायत नहीं है, जो मांगते हैं, वह काम करते हैं। वापस आने के बाद से अच्छा बर्ताव किया, कोई भेदभाव नहीं किया।

इस सवाल पर कि आपके कांग्रेस अध्यक्ष पद के लिए नामांकन भरने की तैयारी थी। सोनिया गांधी से मुलाकात के बाद आपने नामांकन नहीं भरा। इस बात पर गहलोत बोले कि यह हमारा अंदर का मामला है इस बारे में मैं कुछ नहीं बोल सकता।

राहुल गांधी की दाढ़ी ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनावों से पहले, मोदी ने अपनी दाढ़ी को स्वतंत्र रूप से बढ़ने दिया, जिस पर मीडिया ने टिप्पणी की थी कि वे गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर जैसे दिखाई देना चाहते हैं।

विशिष्ट हेयर कट तथा दाढ़ी की स्टाइल परम्परागत रूप से पॉप स्टारों, वैज्ञानिकों, लेखकों तथा बुद्धिजीवियों से सम्बद्ध रहे हैं। जब स्वर्गीय ए.पी.जे. अब्दुल कलाम भारत के राष्ट्रपति बन गये थे, तब अखबारों के कार्टूनिस्टों ने उनके लम्बे बालों को अपने मन चाहे अंदाज में दिखाया था। सार्वजनिक जीवन में "इमेज मेकओवर" आम चीज है। जब गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी "विकास पुरुष" के रूप में प्रोजैक्ट किये जा रहे थे, तो उनके फोटो ज्यादातर डिजायनर कुर्तों तथा जैकिटों में खींचे जाते थे, जो उनके व्यक्तित्व की पहचान बन गये थे, उसके साथ एकाकार हो गये थे।

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री "नेहरू जैकिट" पहना करते थे तथा कोट के काज में एक गुलाब लगाया करते थे। पूर्व प्रधानमंत्री वी.पी.सिंह अधिकांशतः कश्मीरी टोपी पहने दिखाई देते थे। स्टाइल संबंधी ऐसे बयान, जैसे दाढ़ी बढ़ाना- को महानता का सार्वभौमिक पासपोर्ट नहीं माना जा सकता। दोस्तोव्स्की तथा टॉल्सटॉय दाढ़ी रखते थे लेकिन एल्बर्टो कामू या जीन पॉल क्लीन-शेव रहते थे। विनोबा भावे दाढ़ी रखते थे, किन्तु महात्मा गांधी, राम मनोहर लोहिया या सरदार पटेल क्लीन शेव थे। राहुल के संदर्भ में, राजनैतिक रणनीतिकार दिलीप चेरियन ने बड़ी रोचक बात कही है: "दाढ़ी तभी मददगार होती है, जब इसके साथ ही जमीनी कार्य (ग्राउण्ड वर्क) भी हो। चुनाव जीतने के मामले में, केवल दाढ़ी ही पर्याप्त नहीं हो सकती।"

चुनाव आयोग की नियुक्तियों पर फैसला सुरक्षित

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 24 नवम्बर। सुप्रीम कोर्ट गुरुवार को जब चुनाव आयोग की नियुक्तियों के मुद्दे का परीक्षण किया और नियुक्ति प्रक्रिया पर अपना आदेश सुरक्षित रख लिया, तब यह भी पूछा कि अरूण गोयल को चुनाव आयुक्त नियुक्त करने की इतनी जल्दी क्या थी। केन्द्र ने हालांकि कोर्ट की टिप्पणियों का जोरदार विरोध और एटॉर्नी जनरल आर. वैंकटरमानी ने कहा कि इस मुद्दे को गहराई से देखना चाहिए। 5 जजों की संविधान पीठ जिसके प्रमुख जस्टिस के.एम. जोसफ हैं, ने केन्द्र सरकार से प्राप्त गोयल की नियुक्ति की मूल फाइल को ध्यान से पढ़ा और पूछा "ये कैसा इवैलुएशन है। हम गोयल की विश्वसनीयता पर नहीं बल्कि प्रक्रिया पर सवाल कर रहे हैं।"

'सचिन पायलट...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

रहे थे। तो पीछे से बाजार में मौजूद युवाओं ने जमकर मुख्यमंत्री मुर्दाबाद, सचिन पायलट आई लव यू के नारे लगाए, जिसे देखकर यकायक बाजार में सन्नाटा सा छा गया और प्रशासन देखता ही रह गया। एक तरह से कहा जाए तो जब ये लोग बाजार में मुख्यमंत्री मुर्दाबाद और सचिन पायलट आई लव यू के नारे लगा रहे थे तो वहां पुलिस कर्मी भी नजर नहीं आए। इस दौरान अलीपुरा सरपंच हीरा सिंह गुर्जर का कहना था कि जब सचिन पायलट प्रदेश अध्यक्ष थे तो उस समय राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा था कि युवा मुख्यमंत्री बनाया जाएगा ।

युवाओं को रोजगार दिया जाएगा, लेकिन यहां श्री महावीरजी में इस महोत्सव कार्यक्रम के कारण मंदिर कमेटी की ओर से सब्जी वाले, हाथ ठेला की मजदूरी करने वाले सब को हटा दिया है। उन्हे बेघर कर दिया है । क्या उन लोगों को जीने का अधिकार नहीं है । उन्हें रोजगार करने का अधिकार नहीं है । ग्रामीण हरिओम का कहना है कि युवा मुख्यमंत्री होता तो 18 घंटे काम करता, युवाओं को रोजगार देता । महावीर जी में मंदिर कमेटी ने सब्जी विक्रेता, ठेला वालों को हटा दिया है, जो कि गलत है।

मु.मंत्री ने श्रीमहावीरजी में...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

के विचारों को धारण किया। इन्हीं विचारों से ही देश में स्वतन्त्रता आंदोलन प्रेरित हुआ। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार तीर्थ स्थल महावीरजी के विकास के लिए प्राथमिकता से कार्य कर रही है। श्री महावीरजी में गत वर्षो से शिक्षा, चिकित्सा,स्वच्छता सहित अन्य क्षेत्रों मे उत्कृष्ट प्रबन्धन के साथ मूलभूत सुविधाओं का तेजी से विकास किया गया है।

- मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने गुरूवार को करौली के महावीरजी में पंचकल्याणक महोत्सव एवं महामस्तकाभिषेक समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि, पंचकल्याणक महोत्सव का झण्डारोहण कर शुभारम्भ करने का अवसर मिलना सौभाग्य की बात है।

गहलोत ने मन्दिर परिसर में बनाए गए म्यूज़ियम की सराहना करते हुए कहा कि विशिष्ट शैली में निर्मित इस म्यूजियम में बहुत ही सुन्दर मूर्तियों की स्थापना की गई है।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने भगवान महावीर की 24 फीट ऊंची प्रतिमा की स्थापना पर बधाई दी। मुख्यमंत्री ने महामस्तकाभिषेक व पंचकल्याणक महोत्सव के ध्वजारोहण के पश्चात मंदिर में भगवान श्रीमहावीरजी के दर्शन कर प्रदेश की खुशहाली की कामना की। इस अवसर पर उन्होंने पंचकल्याणक व महामस्तकाभिषेक कार्यक्रम की स्मारिका का भी विमोचन किया।

समारोह में पर्यटन मंत्री विश्वेन्द्र सिंह, ग्रामीण विकास व पंचायतराज मंत्री रमेश मीणा, सार्वजनिक निर्माण मंत्री भजनलाल जाटव, हिण्डौन विधायक एवं पूर्व मंत्री भरोसीलाल जाटव, करौली विधायक एवं डांग विकास बोर्ड अध्यक्ष लाखन सिंह, सवाईमाधोपुर विधायक दानिश अबरार सहित अन्य जनप्रतिनिधि, संभागीय आयुक्त भरतपुर सांवरमल वर्मा, पुलिस महानिरीक्षक भरतपुर गौरव श्रीवास्तव, जिला कलैक्टर करौली अंकित कुमार सिंह, जिला पुलिस अधीक्षक करौली नारायण टोगस सहित प्रशासनिक अधिकारी व भारी संख्या में आमजन उपस्थित थे।

हाई कमान को आभास था, भारत जोड़ो यात्रा का अगला...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

जैसे राजनैतिक रूप से महत्वपूर्ण राज्यों में होकर टेढ़े-मेढ़े रास्तों से गुजरना होगा, जहाँ कांग्रेस का बहुत कुछ दाँव पर लगा हुआ है।

संक्षिप्त किन्तु उल्लेखनीय रूप से पुष्ट समाचार के अनुसार, कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी आज सुबह उस समय अपने भाई राहुल गांधी के नेतृत्व वाली यात्रा में शामिल हो गई, जब देश को जोड़ने वाली, नफरत को मिटाने वाली तथा प्रेम का प्रसार करने के मिशन वाली यह यात्रा मध्य प्रदेश से गुजरने के लिये आगे बढ़ गई। राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री सचिन पायलट भी यात्रा में शामिल हो गये। गांधी भाई-बहिन की तस्वीर साझा करते हुये, कांग्रेस के अधिकृत हैन्डल ने हिन्दी में ट्वीट किया, "जब हम साथ-साथ चलेंगे तो हमारे कदम और ज्यादा मजबूत होंगे।" आज गांधी भाई-बहिन के नेतृत्व में, कांग्रेस समर्थकों ने खन्डवा के बोरगाँव से आगे की पदयात्रा शुरू कर दी। खरगोन की तरफ बढ़ने से पूर्व सब लोग सबसे पहले स्वतंत्रता सेनानी तथा आदिवासी दिग्गज टंट्या भील की जन्मस्थली पहुँचे तथा उन्हें श्रद्धा-सुमन अर्पित किये। अपनी यात्रा के दौरान, खास तौर से जब राहुल गांधी आदिवासियों के "वनवासी" कहने की बजाय, "आदिवासी" कह कर संबोधित करते हैं तथा इस प्रकार आर.एस.एस. की शब्दावली एवं कांग्रेस के शब्द-चयन के स्पष्ट अन्तर प्रस्तुत कर देते हैं, राहुल के आदिवासी समुदाय पर फोकस के फलस्वरूप भाजपा एवं आर.एस.एस. बौखलाकर हतोत्साहित एवं उत्तेजित हो जाती हैं। राहुल आदिवासियों से कहते हैं कि ये जंगल और जमीन उनके हैं तथा वे ही इनके प्रथम मालिक है तथा जिसका प्रतिवाद करने का निश्चय भाजपा कर चुकी है। इसके प्रतिकार की कार्यवाही के अन्तर्गत, सत्तारूढ़ भाजपा ने कल टंट्या भील के जन्म स्थान से "जन जातीय गौरव यात्रा" शुरु कर दी है। इस पदयात्रा के शुभारंभ कार्यक्रम में मुख्यमंत्री शिवराज सिंह तथा चार मंत्री उपस्थित थे। हालाँकि राज्य के भाजपा नेताओं ने इस बात से इंकार किया है कि उनकी यात्रा का उद्देश्य कांग्रेस की पदयात्रा का जवाब देना है तथा यह तर्क दे रहे हैं कि "हम, कांग्रेस की तरह, चुनावों से पहले ही यात्रा नहीं निकालते", लेकिन अनौपचारिक बातचीत में उनका डर साफ जाहिर होता दिखाई देता है।

राहुल गांधी के नेतृत्व वाली इस यात्रा का अगला गन्तव्य राजस्थान है, जहाँ कांग्रेस के लिये एक बड़ा संकट हिलोरें ले रहा है। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत तथा शीर्ष कांग्रेस नेता सचिन पायलट के गुटबंदी का झगड़ा एक बार फिर संकटपूर्ण चरम स्थिति पर पहुँच गया है। ज्ञातव्य है कि सचिन पायलट ने 2020 में एक विद्रोह का नेतृत्व किया था, जिसके फलस्वरुप गहलोत सरकार गिरने के कगार पर पहुँच गई थी।

एक सामुदायिक संगठन ने धमकी दे दी है कि अगर पायलट राजस्थान के मुख्यमंत्री नहीं बनाये जाते हैं तो यात्रा में बाधा डाली जायेगी। किन्तु इस कांग्रेस नेता ने स्वयं को इस धमकी से अलग कर लिया है तथा भाजपा पर आरोप लगाया है कि वह "गड़बड़" पैदा करने की कोशिश कर रही है। इस क्षेत्र के राजनैतिक महत्व को पूरी-पूरी मान्यता देते हुये, गांधी ने कल भाजपा पर कड़ा हमला बोला तथा पार्टी पर आरोप लगाया कि उसने कमलनाथ के नेतृत्व वाली कांग्रेस सरकार को गिराने के लिये पार्टी-विधायकों को रिश्वत दी थी, जबकि पार्टी 2018 में राज्य के चुनावों में जीतकर सत्ता में आई थी। उन्होंने बुरहानपुर में कहा, "ह